Geography Part-II By:- Abhishek Kumar.
R.N. College Hajipur.
10/07/2020

Indian Geography

Q. भारत में लौह एवं इस्पात उद्योग की अवस्थिति एवं विकास का सकारण विवरण दें।

(A) परिचय
(B) पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान औद्योगिक विकास
(C) लौह एवं इस्पात उद्योग

(A) परिचय:—

19वीं सदी के अंत तक भारत में उद्योगों के विकास की गति धीमी थी। आधुनिक औद्योगिक चरण की शुरुआत पारनवो (तमिलनाडु) में पहले लौह एवं इस्पात संयंत्र की स्थापना कराई हुई एवं पुनः बंद भी हो गयी। लौह एवं इस्पात उद्योग का सही ढंग से विकास 1908 में शुरु हुआ। उस समय जमशेदपुर में एक इस्पात संयंत्र स्थापित किया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के उपरांत कच्चे पदार्थ के उपलब्धता की कमी के कारण पुनः शिथिल हो गया। आजादी के उपरांत भारत सरकार द्वारा 1948 में औद्योगिक नीति का प्रस्ताव लाया गया। एवं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत इसका विकास करने का प्रयास किया गया जिसके फलस्वरूप भारत में भिलाई, विजयनगर, पारादीप, सलेम इत्यादि जगहों पर संयंत्र स्थापित किया गया।

(B) पंचवर्षीय योजनाओं के दौरान औद्योगिक विकास :

भारत में जब पंचवर्षीय योजना का क्रियान्वयन किया गया तब से प्रत्येक योजना में इसको ध्यान में रखकर योजना बनाया गया जो निम्न प्रकार है –

1. प्रथम पंचवर्षीय योजना :– इस योजना में लौह एवं इस्पात उद्योग पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया।

2. द्वितीय पंचवर्षीय योजना :– इस योजना के अंतर्गत भारी उद्योगों को स्थापित करने पर बल दिया गया इस्पात संयंत्रों के विस्तार पर भी जोर दिया गया जैसे – जमशेदपुर, कुल्टी-बर्नपुर तथा भद्रावती। साथ ही साथ तीन नये लौह एवं इस्पात संयंत्र भिलाई, दुर्गापुर, राउरकेला स्थापित किये गये परंतु चीन युद्ध (1962) के कारण इनके लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सके।

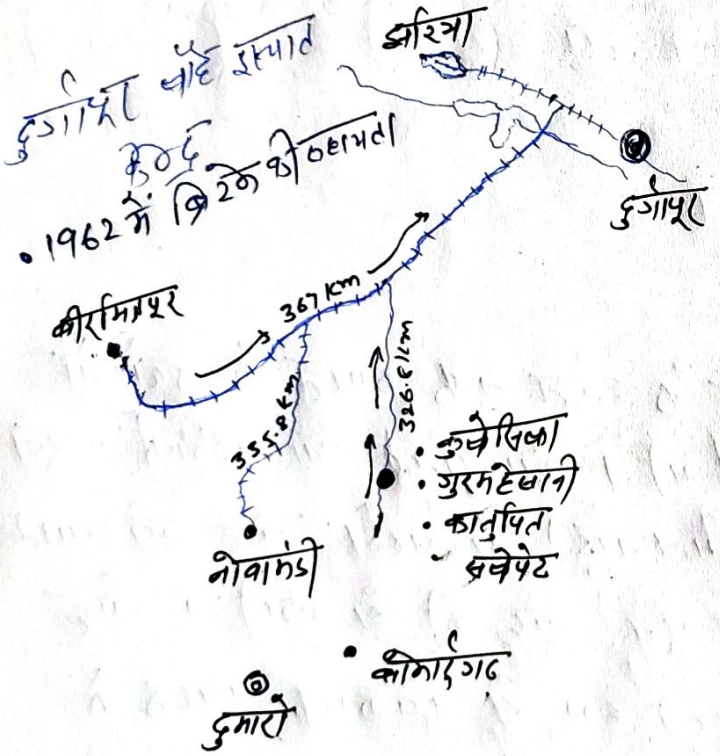

राउरकेला इस्पात उद्योग

- पश्चिमी जर्मनी की सहायता से सुन्दरगढ़ जिले में स्थापित
- यह भारत की एकमात्र इकाई है जिसमें इस्पात L.D रूपान्तरण प्रणाली से उत्पादित होता है।

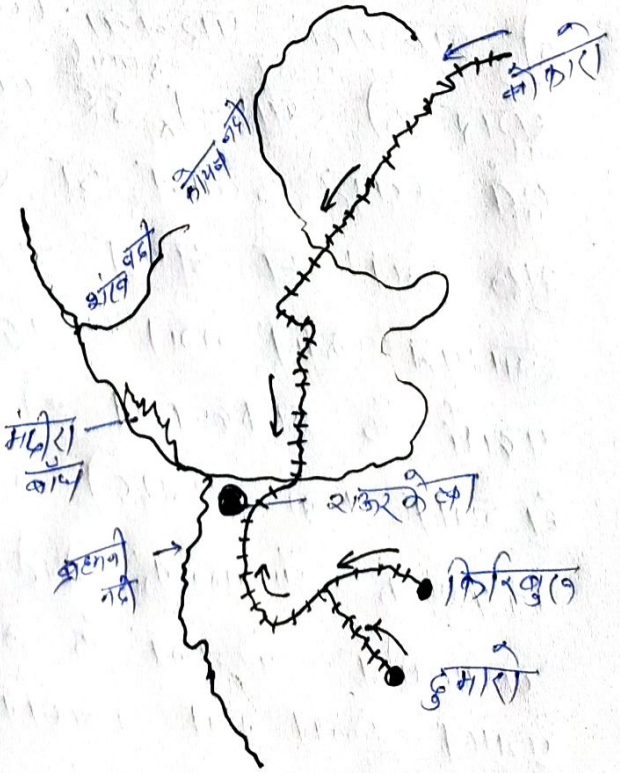

3. तृतीय एवं पंचम पंचवर्षीय योजना :-

इन दोनों योजनाओं में लौह इस्पात उद्योग, सलेम, विजयनगर तथा विशाखापट्टनम स्थापित किया गया साथ ही भारतीय इस्पात प्राधिकरण (SAIL) का गठन किया गया।

उपर्युक्त योजनाओं के साथ-साथ जब 1991 की औद्योगिक नीति क्रियान्वित हुई तो इसका विस्तार के साथ विकास हुआ।

(c) लौह एवं इस्पात उद्योग

भारत में लौह एवं इस्पात उद्योग का इतिहास 4000 वर्ष पुराना है दिल्ली में कुतुबमीनार के निकट लौहस्तंभ काफी पुराना (350 ई०) है। भारत में लौह एवं इस्पात संयंत्र 12 है। टिस्को को छोड़कर सभी बड़े एकीकृत संयंत्र सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत आते है। सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत सभी इस्पात संयंत्रों का पर्यवेक्षण भारतीय इस्पात प्राधिकरण द्वारा किया जाता है। भारत के प्रमुख इस्पात संयंत्रों का विवरण निम्न है -

1. टाटा एवं लौह इस्पात कंपनी, जमशेदपुर
2. इस्को, बर्नपुर
3. भद्रावती लौह एवं इस्पात -1823
4. भिलाई - 1956
5. राउरकेला (H.S.L) - 1956
6. दुर्गापुर H.S.L - 1962
7. बोकारो, B.S.L - 1964
8. सलेम - 1982
9. विजयनगर
10. विशाखापट्टनम - 1970
11. दाईतारी
12. डोलवी

① लोहे एवं उद्योग की समस्याएँ

(i) अधिक निवेश
(ii) अप्रचलित मशीनरी
(iii) सार्वजनिक क्षेत्र के अंतर्गत संयंत्रों का कुप्रबंधन
(iv) नियंत्रित मूल्य
(v) लघु इस्पात संयंत्रों का घाटे में चलना
(vi) कोकिंग कोयले की कमी
(vii) अंतराष्ट्रीय बाजार में प्रतिस्पर्धा

उपर्युक्त समस्याओं के बावजूद लोहे एवं इस्पात उद्योग भारत में अच्छी स्थिति में है।